पाठ 16. बेचारा गुनीराम

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में प्रभावी संप्रेषण संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे शाब्दिक और गैर-शाब्दिक रूप से अपने विचार व्यक्त करने में समर्थ हो सकें। यह हास्य व्यंग्य से भरपूर लोककथा है जिसमें बताया गया है कि रटी-रटाई बातों के सहारे जीवन नहीं चलता। जीवन की हर परिस्थिति का अपना अलग भाव होता है।

पाठ का सार

गुनीराम मूर्ख था। एक दिन जब वह ससुराल जा रहा था तब घरवालों की सलाह के अनुसार वह रास्ते में मिलने वालों को 'नमस्कार' कहता जाता था। सबसे पहले उसे चिड़ीमार मिला। गुनीराम के 'नमस्कार' कह देने के कारण उसकी चिड़ियाँ उड़कर भाग गईं। चिड़ीमार ने उसे पीट दिया। इसी प्रकार रास्ते में अन्य मिलने वालों से भी उसे मार खानी पड़ी। पिटते-पिटते उसका हाल इतना बुरा हो गया कि उसने ससुराल जाने का इरादा छोड़ दिया और घर लौट आया।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस कहानी को बच्चों को जब सुनाएँ तो पहले **मूर्खता, चोर, चिड़ीमार** आदि शब्दों की व्याख्या करें। गुनीराम कहानी में छिपे संदेश से बच्चों को अवगत कराएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 23** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - **र्ख, च्छ, स्क** व **स्त** क्रमशः र्+ख, च्+छ, स्+क एवं स्+त से बने हैं। यह समझाएँ और इससे बने कुछ अन्य शब्दों के उदाहरण भी दें।
  - वाक्य-निर्माण के लिए इस अभ्यास में संज्ञा, विशेषण शब्द दिए गए हैं। वाक्य में इनके उचित प्रयोग के बारे में बतलाएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - बच्चों को ऐसी पुस्तक उपलब्ध कराएँ जिनमें 'कबूतर और जाल' नामक कहानी हो।
  - बच्चों को बताएँ कि चिड़ियों का शिकार करना कानूनी रूप से अपराध है। ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर सज़ा मिल सकती है।